प्रतिबिंब

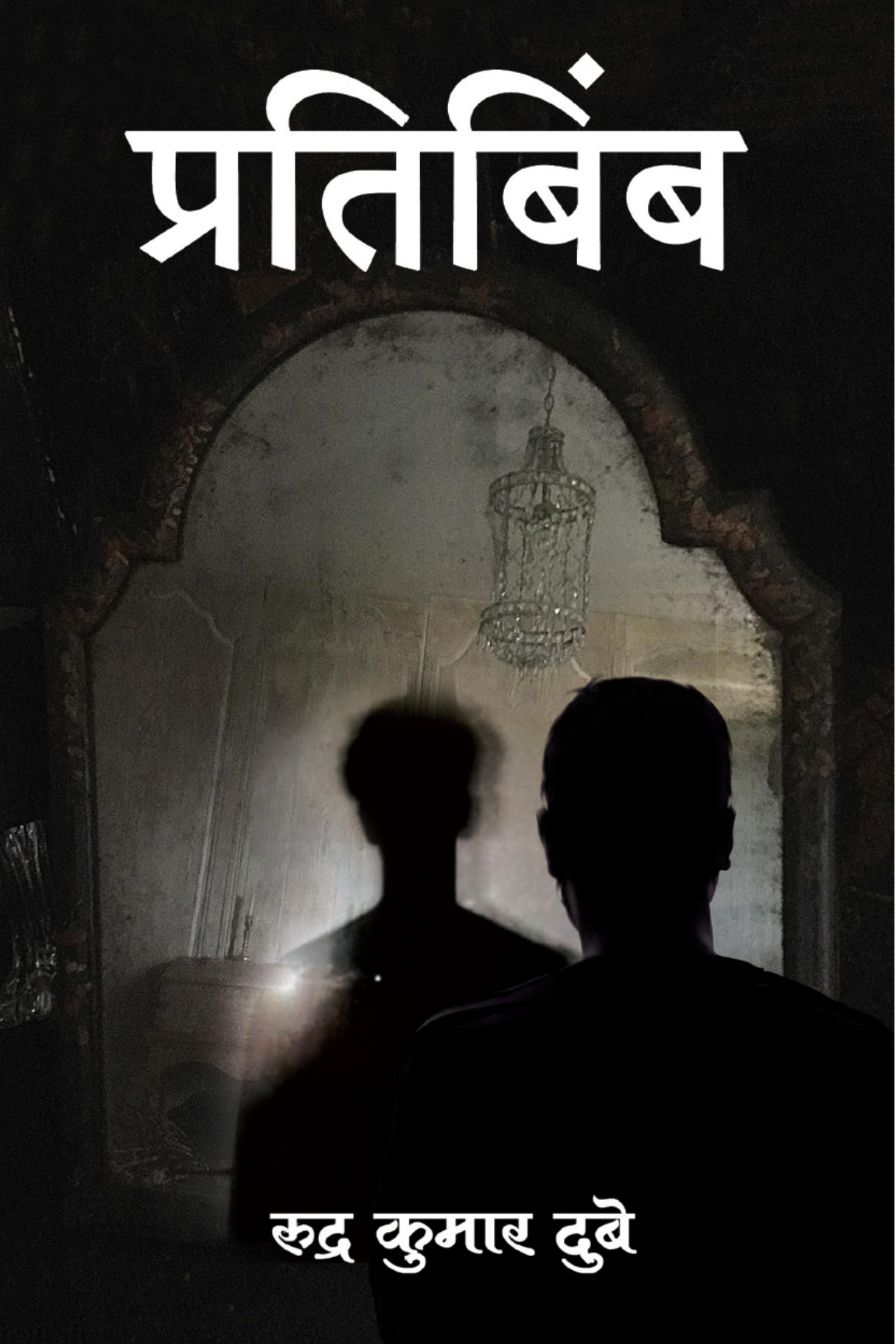

रुद्र कुमार दुबे

Lyrics on the page 50 have been taken from the song 'blowing in the wind' by Bob Dylan. On page 62 from the song 'Did I ever love you' by Leonard Cohen.

Copyright © 2021, Rudra Kumar Dubey
All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or any information storage and retrieval system now known or to be invented, without permission in writing from the publisher, except by a reviewer who wishes to quote brief passages in connection with a review written for inclusion in a magazine, newspaper or broadcast.

Published in India by Prowess Publishing,
YRK Towers, Thadikara Swamy Koil St, Alandur, Chennai,
Tamil Nadu 600016

ISBN: 978-1-5457-5378-1

Library of Congress Cataloging in Publication

Contents

Chapter 1 1

Chapter 2 13

Chapter 3 25

Chapter 4 37

Chapter 5 45

Chapter 6 55

Chapter 7. 67

Chapter 8 77

Chapter 9 87

Chapter 10 95

Chapter 11 103

Chapter 12 113

1.

मुझे अच्छे से याद है, राहुल आज से तीन साल पहले शनिवार की सुबह मरा था | उससे दो दिन ही पहले बुधवार को मैं हॉस्टल से अपने घर आया था क्योंकि पापा की तबियत बहुत ख़राब थी | राहुल ने मुझे रेलवे-स्टेशन तक छोड़ा भी था | मैं घर आया तो पता चला कि पापा को टीबी है, शुक्रवार की रात मैंने वापस ट्रेन पकड़ी और शनिवार की सुबह अपने हॉस्टल पहुँच गया | हॉस्टल में मेरा और राहुल का कमरा तीसरी मंजिल पर था, हम अपने कमरे को ज्यादातर खुला ही रखते पर आज वो अन्दर से बंद था | सुबह थी तो मुझे लगा कि शायद राहुल अभी सो रहा होगा | मैंने अपने पास रखी डुप्लीकेट चाभी से कमरा खोला और कमरा खोलते ही जैसे एकदम से मेरी चीख़ निकल गयी | राहुल ने कमरे में खुद को फांसी लगा लिया था, उसके गले में बाथरूम की पाइप थी जिसका पहला सिरा उसके गले से और दूसरा सिरा ऊपर पंखे से बंधा हुआ था | पाइप राहुल के वजन से खींच के थोड़ी बढ़ गयी थी जिससे राहुल के पैर नीचे बेड को छू रहे थे, कोई अगर अचानक से उसे देखता तो ऐसे लगता जैसे कि राहुल बेड पे लगभग बैठा हुआ है | उसकी आँखें फट कर चौड़ी हो गयी थीं और उसकी जीभ पूरी बाहर निकल आयी थी | वो डरावना लग रहा था पर थोड़ा सा मजाकिया भी | उसका मोटा चेहरा खून के दबाव के कारण और फूल गया था, अगर उसकी सही से कल्पना करनी हो तो उसे ऐसे समझिये जैसे कि किसी अंग्रेजी ज़ोंबी फिल्म में कोई मोटा ज़ोंबी |

कई दिनों के बाद एक रात मैं उसी कमरे में बैठा हुआ राहुल के ही बारे में सोच रहा था कि मुझे उसकी एक डायरी मिली | डायरी में राहुल ने लिखा था –

18 अगस्त, 2015.

इन दो तीन महीनों से भगवान या फिर ऐसी किसी शक्ति से मेरा भरोसा पूरा उठ चुका है | मुझे नहीं लगता कि नियति जैसी कोई चीज़ होती भी है | पूरी दुनिया बस

एक आकास्मिक घटना है, ऐसे जैसे लोहे पे जंग लगना या किसी ऊँची जगह से किसी बॉल का लुढकना, जिसका कोई कारण नहीं जो सिर्फ ऐसे ही है | ऐसे सोचने पे मेरी सफलता, मेरी असफलता, मेरे लक्ष्य, मेरे सपने सब कुछ बेफजूल से मालूम होते हैं | जैसे हर दिन का मेरा ये संघर्ष, मेरी ये मेहनत, ये मेरी रोज़ की आपाधापी मुझे कहीं नहीं ले जा रही, और फिर मुझे अपनी हर एक सांस बेईमानी लगने लगती है जैसे कि मैं जिंदा रह के अपना समय बर्बाद कर रहा हूँ | कभी-कभी सोचता हूँ कि क्या संजना को पता चलता होगा कि मैं उसके बारे में क्या महसूस करता हूँ? मैंने उससे अब तक वो बात नहीं कही सिर्फ ये सोचके की वो बात कहने के लिए शायद कोई और अच्छा वक़्त होगा, और अब वक़्त ही नहीं |

कल की बात है, मैं एक सपना देख रहा था कि मैं अपने शावर में नहा रहा हूँ | मैं दीवाल का टेक लेके अपना सिर हल्का सा नीचे झुकाए खड़ा था, मेरी नज़र मेरे नंगे शरीर को छूकर फर्श पर नीचे गिरती पानी की बूंदों की ओर थी | मैं हर एक बूँद को जैसे महसूस कर सकता था और एकदम से अचानक जैसे पानी की रफ़्तार बहुत तेज हो गयी, मैंने वहाँ से हटने की कोशिश की पर मैं अपने जगह से हिल भी न सका | पानी की रफ़्तार हर बितते क्षण के साथ और भी बढ़ते जाती और ऐसा लगने लगा कि पानी अभी मेरे सिर को छेद कर भीतर चला आएगा और ऐसा ही हुआ, मेरा सिर जैसे एकाएक दो भागों में फटा और टुकड़े-टुकड़े होकर मेरे सामने नीचे फर्श पे आ गिरा | इसके बाद मेरा कन्धा, मेरे हाँथ, मेरा पेट फिर आखिर में मेरे पैर सब कई टुकड़े होकर धीरे-धीरे फर्श पे आ गिरें और बाथरूम की उस छोटी से नाली से होकर बाहर बह गयें | मैंने खुद को उस नाली से बहते देखा |

कल की थेरेपी में डा०अनुपम ने कहा कि घबड़ाओ मत राहुल, हर ब्यक्ति की ज़िन्दगी में एक बार ऐसा समय आता है जब वो अपने जन्म लेने पर ग्लानी का अनुभव करने लगता है, जब उसे अपनी ज़िन्दगी ब्यर्थ मालूम होने लगती है, पर अगर ज़िन्दगी को थोड़े और ध्यान से देखा जाए तो ये कई बार हमें चौंकाने वाली 'सरप्राइजिंग' चीज़ें भी दिखाती है, और जितनी मेरी समझ है उसके अनुसार केवल इतनी ही बात ज़िन्दगी को एक अर्थ देने के लिए काफी है |

ज़िन्दगी ने मुझे कभी नहीं चौंकाया, कम से कम 'पॉजिटिव सेंस' में तो बिल्कुल नहीं | और अगर केवल इतनी सी बात ज़िन्दगी को अर्थ देने के लिए काफी है तो फिर

मैं किसी को चौंकाने का कारण क्यों ना बनूँ | "मैंने एक बार अपने पापा को कहते भी सुना था कि पता नहीं कहाँ से ये पैदा हो गया |"

राहुल ने सबसे आखिरी में एक कविता भी लिखी थी-

क्या कोई है यहाँ इसके सिवा? कुछ शेष स्मृतियाँ, एक ठंडी हवा,
कुछ मद्धम तारे, भीगी पलकें, एक उदास हृदय, टूटा सपना |
एक उपवन उजड़ा-उजड़ा सा, एक निर्झर जो कि सुखा है,
एक जीवन इनके बीच फंसा, किसी गड्ढे का गन्दा जल है |
एक घर है या कि कारागार? एक रात है जिसमें चाँद नहीं,
एक मंजिल है पथहीन मगर, है अंत लेकिन शुरुआत नहीं |

मुझे कहना होगा कि मैं इसे पढ़के प्रभावित हुआ |

❖ ❖ ❖

आज सुबह कल से मैं जल्दी उठा, मुझे एक इंटरव्यू देने जाना था | मैं अब उस हॉस्टल में नहीं रहता, अब शहर के पश्चिम में जहाँ ढ़लान थोड़ी ज्यादा है वहाँ पे मैंने एक कमरा लिया है, दूर से देखने पे ये ऐसे लगता है जैसे ये नीचे लुढ़क रहा हो | मैंने एक सफ़ेद शर्ट और काली पैंट पहनी, उस शर्ट के बटन बहुत ज्यादा धुलने से घिस गए थे पर ये चिंता की बात नहीं थी, मेरी टाई से वो बिल्कुल साफ़-साफ़ ढँक गयें और इस तरह पहली बार मुझे टाई का असली 'यूज़' भी समझ में आया |

अपने कमरे से निकलके कोई दो गली मैंने पार की कि मैंने देखा सड़क पर लोगों की भीड़ लगी है | लोगों के बीच से एक औरत की बड़ी कर्कश आवाज़ सुनाई दे रही थी | वो कहती,

इसने मुझसे वादा किया था कि शादी के बाद ये मुझे खुश रखेगा, पर खुश रखना तो छोड़ो मुझे ढंग से दो वक़्त की रोटी भी नसीब नहीं होती | सारा खाना इसके आठ बच्चे मिलके खा जाते हैं, इन सबके बाद अगर मैंने शर्मा जी के साथ एक रात बिता ही ली केवल इसलिए कि मुझे भरपेट खाने को मिल सके तो मैंने क्या गलती की? क्या खुद का ख्याल रखना, खुद की चिंता करना कोई गलत बात है? और मुझे खुश रखने का अपना वादा जब इसने तोड़ा तो फिर मैं किसी वादे की चिंता क्यों करूँ? और फिर मैंने ऐसा कोई वादा किया भी नहीं था |

मुझे औरत की बातों में दिलचस्पी होने लगी, मैंने उसका चेहरा देखने की कोशिश की पर लोगों की भीड़ के बीच वो कहीं नज़र ही नहीं आयी | मैंने अपने घड़ी में टाइम देखा तो अभी इंटरव्यू शुरू होने में वक़्त था | मैं झट से पास की एक दुकान के पहले मंजिले पे चढ़ गया और उसकी खिड़की से भीड़ के बीच खड़ी उस औरत को तलाशने लगा | मेरे अगल-बगल वहाँ पे कम से कम 20 लोग थें और हों भी क्यों ना? कुछ ही देर में मेरी नज़र उस औरत पे पड़ी, औरत ने एक हरे रंग की गन्दी साड़ी पहन रखी थी, उसका चेहरा जो कभी सुन्दर रहा होगा हल्का सा सावंला था | उसके पास में दो आदमी खड़े थे, जिसमें से एक बिल्कुल मरियल सा था केवल एक तौलिया लपेटे, उसके शरीर पे इतने बाल थें कि दूर से पता ही नहीं चलता कि वो गोरा है या काला, और दूसरा था एक सफारी-सूट पहने एक नाटा सा मोटा अधेड़ उम्र का |

औरत की बात सुनके वो मरियल सा आदमी उसके पास गया और उसे बड़े जोर से एक तमाचा मारा, औरत का मुँह दूसरी तरफ घूम गया |

कमीनी, निर्लज्ज कहीं की, ऐसी बातें सबके सामने करने में तुझे शर्म नहीं आती? माना कि मेरे पास उतने पैसे नहीं, ये भी माना कि तेरा ये पेट नहीं भरता होगा, पर इसका मतलब ये है कि तू किसी के पास जाके मुँह काला कराएगी? अरे अगर तेरे पेट भरने का ही सवाल है तो जा आज से तू मेरा भी आधा हिस्सा खा ले, मैं आधे पेट खा के रहूँगा |

मरियल आदमी के इस बात पे मेरे बिल्कुल बगल में खड़ा एक लगभग साठ साल का आदमी मुझसे बोला, देख रहे हो, स्वाभिमान है इसके अन्दर, आधा पेट खाना खाने को तैयार हो गया | अगर मैं होता तो जानते क्या करता?

मैंने कुछ नहीं बोला |

अगर मैं होता तो पहले बल भर इस कामिनी की कुटाई करता, फिर इस शर्मा के बेटे से मोटा पैसा लेता और फिर इन सबके बाद इसको तलाक़ भी दे देता, पर कोई नहीं स्वाभिमान है इसके भीतर |

औरत ने अपना मुँह इधर किया और हँसते हुए बोली, वाह बात तो तू ऐसे कर रहा है जैसे कितनी फिक्र है तुझे अपने सम्मान की, पर ये तब कहाँ थी जब तेरी माँ बीमार थी और तूने मुझे आधी रात को शर्मा जी के यहाँ दवाई लाने के लिए भेजा था? क्या तुझे पता न था कि शर्मा जी दवाई के बदले क्या लेते हैं? तुझे क्या लगता है तेरे उन आठ बच्चों का पेट तेरी कमाई से भर जाता था? तेरे और तेरे बच्चे यहाँ तक कि तेरे माँ

के खातिर मैंने अपनी इज्जत भी दाव पे लगा दी और उन सभी चीज़ों के लिए तू मुझे निर्लज्ज कह रहा है, तो जा मैं तुझे आज आज़ाद करती हूँ | इतना कह के औरत बड़े जोर से पास के एक झोपड़ी में भागी, किसी को कुछ समझ में नहीं आया और तभी अचानक से झोपड़ी से धुआं उठने लगा, कोई कुछ भी करता कि झोपड़ी से भागती हुई औरत बाहर आयी, उसके शरीर में आग लगी हुई थी, एक ही क्षण में उसका पूरा शरीर धू-धू करके जलने लगा पर औरत के मुँह से एक आवाज़ तक नहीं निकली | लोगों की भीड़ छटने लगी, जिधर रास्ता मिला सब उधर भागें |

मैं वहीं खड़ा सब कुछ देखता रहा, उस मरियल आदमी ने झट से अपनी तौलिया निकाली और उससे औरत की आग बुझाने की कोशिश करने लगा, पर तौलिया से आग क्या बुझती उल्टे उसमें ही आग पकड़ ली | ये देख मरियल आदमी झोपड़ी में भागा और एक कम्बल ले आया | औरत एकाएक बेसुध जमीन पे गिर पड़ी, मरियल आदमी तेजी से उसके पास आया और उसपे कम्बल डाल दिया | कुछ ही देर में आग शांत हो गयी और एक काला धुआं औरत के शरीर से निकलने लगा जो धीरे-धीरे चारों ओर छा गया |

मरियल आदमी वहीं बैठे जोर-जोर से रोते जाता, उसके आस-पास और कोई न था, वो नाटा सा मोटा आदमी भी नहीं |

❖ ❖ ❖

इंटरव्यू-हॉल के आगे बहुत लम्बी लाइन लगी हुई थी | एक के पीछे एक खड़े सफ़ेद शर्ट और काली पैंट पहने लोग दूर से देखने पर कतार में खड़े कबूतर नज़र आ रहे थे | इंटरव्यू-हॉल के 'मेन-गेट' पे एक बूढ़ा आदमी बैठा था, वही बारी-बारी से एक रजिस्टर में से देखकर सबका नाम बुलाता |

धीरे-धीरे दोपहर हो चली थी और गर्मी बढ़ने लगी, पर अब भी लोग एक दुसरे से बिल्कुल सट कर ऐसे खड़े थे कि उनकी पीठ का पसीना उनके पीछे के आदमी के पेट के पसीने से जाके मिलता और धीरे-धीरे पसीने की एक पतली सी धारा उनके बीच से निकलकर जमीन पर गिरने लगती | चारों ओर पसीने की बद्बू फैली थी, इन सबके बावजूद भी मुझे हल्की-हल्की नींद आ रही थी, मैं आज हर दिन से थोड़ा जल्दी जो उठ गया था | मैंने एक जम्भाई ली और इंटरव्यू-हॉल के गेट पे बैठे उस बूढ़े आदमी की ओर देखा, सुबह से रजिस्टर पलट-पलट के वो थक चुका था पर जैसे ही वो अपने

सामने लोगों की इतनी लम्बी कतार देखता उसके चेहरे पे एक चमक आ जाती | अभी कुछ ही देर पहले एक आदमी ने उससे पूछा, दादा इतनी देर क्यों हो रही है? तो उसने जवाब दिया, मुझे क्या पता क्यों देर हो रही है, सुबह से देख रहे हो ना कि मैं भी बाहर ही बैठा हूँ तुम सबके साथ |

वो बीच-बीच में अपने कुर्सी से उठ जाता और अपने हाँथ-पैर सीधे करता | उसके पास में ही एक 'गार्ड' खड़ा था, उसके बिना पूछे ही वो उससे कहता, इतना काम एक आदमी कैसे करे? पर कर भी क्या सकते हैं? इतने गंभीर मामले के लिए डायरेक्टर साहब मुझे छोड़ और किसी पे विश्वास जो नहीं करतें |

जैसे-जैसे दोपहर बढ़ते जाती, वैसे–वैसे वो बूढ़ा आदमी और पसीने छोड़ता और वैसे-वैसे ही गार्ड की नज़रों में उसके लिए इज्जत भी बढ़ते जाती |

मैंने एक गहरी सांस ली और चुपचाप वहीं खड़ा रहा, तभी अचानक मेरे पीछे से किसी ने अपना हाँथ मेरे कंधे पे रखा | मैंने पीछे पलट के देखा तो वो मेरे इतने कद का ही था, पसीने से पूरा लथपथ, डरा हुआ, भौंवे सिकोड़े बेशक आदमी जैसा |

मेरे कुछ कहने से पहले ही वो बोला, आप पहली बार इंटरव्यू दे रहे हैं?

पहली बार तो नहीं, मैंने जवाब दिया |

तब तो इंटरव्यू में क्या पूछा जाता है वो आपको पता ही होगा |

बेसिक पूछते हैं केवल |

अच्छा अच्छा, वो धीरे से बोला और एक हल्की सी सांस बाहर निकाली |

मैं अब वापस अपनी ओर मुड़ने ही वाला था कि वो एकदम से बोल पड़ा, वैसे बेसिक में भी क्या बेसिक पूछते हैं?

मुझे जैसे हँसी आ गयी, मैं हँस भी देता पर इससे पहले ही थोड़ी दूर पे कुछ शोर-गुल सुनाई देने लगा |

मेरे साथ सबकी नज़रें वहाँ गयीं | तीन खुली जीप में लगभग एक दर्जन लोग, काला कुर्ता-पायजामा और काला गमछा ओढ़े हमारी ओर आयें |

उन सबके बीच से एक ने बड़े जोर और बड़े गर्व से चिल्लाया, 'स्टूडेंट यूनियन जिंदाबाद' |

और उसके इतना बोलते ही सभी चिल्ला पड़े, 'स्टूडेंट यूनियन जिंदाबाद' |

सबकी नज़रें उनपे टिकी हुई थीं और तभी चार पुलिसकर्मी दौड़ते हुए उनके ओर आयें |

अगर कोई हुडदंग यहाँ हुई तो सबको चुन-चुन के हवालात के अन्दर डालूँगा, उन चारो पुलिसकर्मीयों में से एक ने कहा |

ये सुनके उन काले कुर्ते-पायजामे पहने ब्यक्तियों में से एक जो की निश्चित ही इनका नेता रहा होगा बोला, हम यहाँ अपनी बात रखने आये हैं कोई हुडदंग करने नहीं, पर ये आज के हमारे समाज का दुर्भाग्य है कि अपनी बात रखने को हुडदंग करना समझा जाता है |

पुलिसकर्मी चुप ही रहें, इसके बाद वो आदमी हमारी ओर घुमा और ज़ोर से बोला, देख रहे हैं ना भाइयों, क्या हम लोग आपको कहीं से भी हुडदंग मचाने वाले समाज के अराजक-तत्व नज़र आते हैं? अरे हम तो केवल यहाँ इसलिए हैं क्योंकि हमें अपनी और आप भाइयों की बात रखनी है | मैं जानता हूँ कि आप लोग थके हुए हैं और क्यों ना हों, अरे कोई भी इस भीषण गर्मी की इस दहकती दोपहर में जब धरती तवा सी जल रही हो ऐसे नंगे सिर खुले में खड़ा होगा तो वो थका ही होगा, पर मैं ये भी जानता हूँ कि आप लोग अन्दर से उतने गुस्सा भी हैं, और ये आपकी परिपक्वता, आपका ये धैर्य जिसकी सराहना करनी होगी वो आपके इस गुस्से को थामे हुए है | पर इसी के साथ मैं ये भी कहना चाहता हूँ भाइयों कि अब बस बहुत हुआ, हमारे धैर्य, हमारे सहयोग को हमारी कमजोरी समझी जा रही है और जिसका परिणाम ये है कि समाज के आप काबिल नवयुवकों को जानवरों की तरह इस दहकती दोपहरी में खुले आसमान के तले खड़े किया गया है | मैं पूछता हूँ आखिर विश्व का ऐसा कौन सा देश होगा जो एक तरफ खुद के 'वेलफेयर-स्टेट' होने का दावा भी करता हो और दूसरी तरफ अपने युवाओं के साथ ऐसा ताल्लुख करता हो? कोई नहीं | अरे क्या हम लोग कोई कठपुतली हैं? नहीं ना | तो फिर हम इनके इशारे पे नाचेंगे भी नहीं | साथियों, मेरे भाइयों अगर आपको लगता हो कि अबतक जो मैंने बात कही है उसमें जरा सी भी सच्चाई है तो अपने गर्दन में पड़ी ये टाई निकाल कर ऊपर आसमान में फेंक दीजिये जो सरकार की जीहज़ुरी की निशानी है और जिसका कोई उपयोग भी नहीं, और इसी के साथ स्वागत कीजिये इस काले गमछे का जो आपकी कड़ी मेहनत से निकले पसीने को पोछने में भी काम आएगा |

उसके इतना कहते ही कुछ लोग जीप से नीचे उतरें और हमारी ओर आने लगें | उन सभी ने अपने हाँथ में एक-एक थैला लिया हुआ था जिसमें काले गमछे रखे हुए थे | वे बारी-बारी से कतार में खड़े लोगों को अपनी टाई उतारने को कहते और फिर उसे एक काला गमछा देतें |

मैंने एक गहरी सांस ली और मन ही मन सोचा कि अगर मैं टाई निकाल दूंगा तो मेरे घीसे बटन सबको दिखने लग जायेंगे | पर मैं चाहता तो गमछा लेने से इंकार भी कर सकता था, आखिर ये कोई जबरदस्ती नहीं थी, पर कास ये इतना आसान होता | कतार में खड़ा एक भी आदमी गमछा लेने से इंकार नहीं कर पाया और फिर इन सबके बीच एक अकेला मेरा इंकार करना मुझे इन सबसे अलग खड़ा कर देता और इतनी हिम्मत नहीं थी मेरे पास | वे लोग धीरे-धीरे मेरे पास आने लगे थें, मेरी धड़कने तेज होने लगीं और जैसे मेरे पैर कांपने लगें, मैं ऊहापोह में फंसा था और फिर मेरी बारी आ ही गयी |

भाई अपनी टाई उतारिये, वो मेरी तरफ काला गमछा बढ़ाते हुए बोला |

मैंने कोई जवाब नहीं दिया, मैं एकटक उसकी ओर देखे जाता |

क्या आप इंकार कर रहे हैं? वो थोड़ी तेज आवाज़ में बोला, और सब लोग मेरी तरफ देखने लगें |

मैं जैसे सन्न पड़ गया था | मैंने आगे कुछ नहीं सोचा और एकदम से अपनी टाई उतार कर उसे दे दी |

टाई उतारते ही मेरे घिसे बटनों पे उसकी नज़र गयी और इसी के साथ उसके चेहरे पे एक मुस्कान उभरी जो मेरे दिल को कई हिस्सों में तोड़ गयी |

इसे मुझे मत दो भाई, आसमान में उठा के फेंको, ऐसे की तुम आज़ाद हो, वो बोला |

मैंने जोर लगाया और टाई उठाकर आसमान में फेंका, वो कोई मुझसे दो या तीन फीट ही ऊपर उड़ी और फिर नीचे जमीन पे गिर के धुल में मिल गयी |

बहुत अच्छा, वो मुस्कुराया और मुझे वो काला गमछा देकर आगे बढ़ गया |

❖ ❖ ❖

इंटरव्यू-रूम का गेट मैंने आधा खोला तो अन्दर इंटरव्यू-रूम में दो इंटरव्यूअर बैठे थे, दोनों के बाल पूरे झड़े थे | मैंने बड़े विनम्र होकर कहा, “मे आई कम इन सर” |

मेरी आवाज़ सुनकर उन दोनों ने मेरी ओर देखा और बोलें, हाँ, हाँ आओ, आओ |

मैं चुपचाप रूम में चला गया, मेरे गर्दन में काला-गमछा अभी भी बंधा हुआ था |

रूम के अन्दर रखी कुर्सी पे बैठने के लिए मैंने उनसे पूछा तो वे बोलें, कुर्सी पे बैठने के लिए तुम्हे हमारी इजाज़त चाहिए पर उसके बाद तुम हमसे विरोध जताओगे, अच्छा है |

मैंने उनको कोई जवाब देना सही नहीं समझा और चुपचाप कुर्सी पे बैठ गया |

उन्होंने भी आगे कुछ नहीं कहा | उन्होंने मेरी फ़ाइल जोकि उनके पास पहले से ही थी वो देखी और बोलें, अच्छा तो सिद्धार्थ शर्मा|

मैंने कहा, जी |

अपने बारे में हमें कुछ बताओ |

मैंने एक गहरी सांस ली और बोला, जैसा कि आप जानते हैं कि मेरा नाम सिद्धार्थ शर्मा है,

हम कुछ नहीं जानतें, पहले इंटरव्यूअर ने मुझे इतना कहते ही टोका |

मैं घबड़ाकर कर बोला, पर सर आपने अभी तो मेरा नाम लिया |

ये कहते ही उन दोनों ने मेरी ओर ऐसे देखा जैसे मैंने कोई सीमा लाँघ दी हो | मुझे लगा शायद अब मुझे वो जाने के लिए कह देंगे पर उन्होंने एक ठंडी सांस ली और कुछ सोचने के बाद पहला इंटरव्यूअर मुझसे बोला, ठीक है, आगे बताओ |

मेरे जान में जैसे जान आयी, मैंने कहा, सर मेरा नाम सिद्धार्थ शर्मा है | मैं दिल्ली का रहने वाला हूँ, मैंने अपना इंटरमीडिएट रेड रोज कॉलेज से किया है |

और इतना कहते ही उस पहले इंटरव्यूअर ने एक बार फिर मुझे टोका और बोला, हम देख पा रहे हैं कि तुमने बी.टेक. डिग्री के लिए अप्लाई किया था, तुमने दो साल इसकी पढ़ाई भी की, पर फिर तुमने इसे बीच में ही छोड़ दिया, ऐसा क्यों? क्या तुम्हारी दिलचस्पी इंजीनियरिंग से चली गयी थी?

नहीं सर मेरा दोस्त चला गया था, मैंने कहा |

क्या मतलब? वे दोनों मेरी बात सुनके जैसे थोड़े से चौंके |

मैं एक क्षण के लिए शांत रहा और फिर बोला, सर वो मेरे इंजीनियरिंग के दुसरे साल में मेरा एक दोस्त था, जो मेरा रूममेट भी था, उसने हमारे रूम में ही ख़ुदकुशी कर ली थी | मेरे 'एग्जाम्स' आ रहे थे पर मैं उसकी मौत से अभी उबर नहीं पाया था, जिसका नतीजा ये हुआ कि मैं सारे ही सब्जेक्ट्स में फेल हो गया |

वे दोनों मेरी तरफ कुछ देर तक देखते रहें और फिर वो दूसरा इंटरव्यूअर बोला, तो कुल मिलाके तुम अभी बेरोजगार हो |

You've Just Finished your Free Sample

Enjoyed the preview?

Buy: https://store.prowesspub.com